

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के सरोजिनी नायडू सेंटर फॉर विमेंस स्टडीज़ और साहित्य अकादमी ने 'जेंडर्ड एपिस्टेमोलोजीज़' पर संगोष्ठी आयोजित की

नई दिल्ली, 25 सितंबर, 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के सरोजिनी नायडू सेंटर फॉर विमेंस स्टडीज़ (SNCWS) ने साहित्य अकादमी के सहयोग से 24 सितंबर 2026 को जेएमआई के एफटीके ऑडिटोरियम (सेंटेनरी गेट नंबर 13) में 'जेंडर्ड एपिस्टेमोलोजीज़: अनपैकिंग द इंडियन नॉलेज सिस्टम' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की।

SNCWS की निदेशक प्रो. विजयलक्ष्मी बरारा के नेतृत्व और डॉ. अपर्णा दीक्षित के संयोजन में आयोजित इस संगोष्ठी में 140 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें जाने-माने वक्ता, शिक्षाविद, शोधकर्ता, छात्र और विश्वविद्यालय के तथा बाहर के प्रतिभागी शामिल थे।

इस कार्यक्रम में एक उद्घाटन सत्र, दो कार्य-सत्र और एक समापन सत्र शामिल था, जिसमें आठ वक्ताओं ने जेंडर, नॉलेज प्रोडक्शन और भारतीय ज्ञान प्रणाली के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादमी की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री मृग नयनी गुप्ता के औपचारिक स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि जो बातें अभी तक दर्ज नहीं की गई हैं, उन्हें दर्ज करना कितना महत्वपूर्ण है। उद्घाटन भाषण देते हुए, जामिया में डीन (अकादमिक मामले) और सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ सोशल इनक्लूजन की निदेशक प्रो. तनुजा ने ज्ञान, प्राण और बुद्धिमत्ता की अवधारणाओं पर चर्चा की। उन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझते समय पुरुष-महिला और आधुनिक-प्राचीन जैसे बाइनरीस से आगे बढ़ने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

मुख्य वक्तव्य जाने-माने समाजशास्त्री प्रो. मैत्रेयी चौधरी ने दिया, जिन्होंने संदर्भों के माध्यम से ज्ञान को समझने के महत्व का आलोचनात्मक विश्लेषण किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ने के लिए यह समझना सबसे महत्वपूर्ण है कि ज्ञान का उत्पादन और निर्माण कैसे होता है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए, प्रो. विजयलक्ष्मी बरारा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के दायरे में इस तरह के एकेडमिक कार्यक्रमों के आयोजन के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस संगोष्ठी को जेंडर स्टडीज़ और ज्ञान निर्माण के क्षेत्र में एक समयोचित पहल बताया।

"लाइव्ड एक्सपीरियंस" शीर्षक वाले पहले वर्किंग सेशन की अध्यक्षता जामिया के समाजशास्त्र विभाग के सीनियर प्रोफेसर, प्रो. अरविंदर ए. अंसारी ने की। नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी की प्रो. रेखा शांगलियांग और जामिया के समाजशास्त्र विभाग की प्रो. गोमती बोदरा हेम्रोम ने क्रमशः खासी और बैगा समुदायों के वास्तविक जीवन के अनुभवों पर अपने पेपर प्रस्तुत किए। इस सत्र में केस-बेस्ड स्टडीज़ के ज़रिए भारतीय ज्ञान प्रणाली की पड़ताल की गई और ज्ञान, सामुदायिक जीवन, सांस्कृतिक प्रथाओं और रोज़मर्रा के अनुभवों के बीच संबंधों को उजागर किया गया।

"अंडरस्टैंडिंग द इंडियन नॉलेज सिस्टम" शीर्षक वाले दूसरे वर्किंग सेशन की अध्यक्षता जामिया के इतिहास विभाग की अध्यक्ष प्रो. प्रीति शर्मा ने की। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. सुधा सिंह ने साहित्य में महिलाओं की अनदेखी के बारे में बात की और महिलाओं के ज्ञान और भाषा की अनुभवात्मक प्रकृति पर ज़ोर दिया।

जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर संस्कृत एंड इंडिक स्टडीज़ के प्रोफेसर, प्रो. रजनीश कुमार मिश्रा ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने के लिए प्राचीन ग्रंथों को आधारभूत संदर्भ के रूप में इस्तेमाल करने और उनसे जुड़ने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए क्लासिकल संस्कृत ग्रंथों का हवाला दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी इरविन कॉलेज में डेवलपमेंट कम्युनिकेशन की पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अंजलि कपिला ने महिलाओं के लोक-साहित्य पर एक पेपर प्रस्तुत किया, जिसमें विशेष रूप से गढ़वाल की महिलाओं के जीवन और चुनौतियों का ज़िक्र किया गया।

समापन भाषण इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU), नई दिल्ली के रजिस्ट्रार प्रो. जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने दिया। कई साहित्यिक ग्रंथों का हवाला देते हुए, उन्होंने भारतीय महिला लेखिकाओं और कवयित्रियों की रचनाओं को पढ़ने के महत्व पर ज़ोर दिया, ताकि उन प्रक्रियाओं को समझा जा सके जिनके ज़रिए महिलाओं ने ज्ञान का निर्माण, अभिव्यक्ति और प्रसार किया है।

समापन सत्र की अध्यक्षता जामिया के सोशल साइंसेज फैकल्टी के डीन प्रो. जुबेर मेनाई ने की। अपनी बात रखते हुए, उन्होंने ऐसे एकेडमिक कार्यक्रमों के आयोजन के महत्व पर ज़ोर दिया जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में गहरी सोच और अलग-अलग विषयों के बीच आपसी जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं।

संगोष्ठी का समापन संगोष्ठी की कन्वीनर डॉ. अपर्णा दीक्षित द्वारा पेश की गई विस्तृत रिपोर्ट और उनके औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी